

॥ वाल्मीकिकृतं श्रीगणेशस्तवनम्  
अथवा गणेशाष्टकम् ॥

.. Shri Ganeshastavanam by Valmiki ..

sanskritdocuments.org

August 20, 2017

---

.. Shri Ganeshtavanam by Valmiki ..

॥ वाल्मीकिकृतं श्रीगणेशस्तवनम् अथवा गणेशाष्टकम् ॥

Sanskrit Document Information



---

Text title : gaNeshastavanam by vAlmIki  
File name : gaNeshastavanamvAlmIki.itx  
Category : aShTaka, ganesha  
Location : doc\_ganesha  
Language : Sanskrit  
Subject : philosophy/hinduism/religion  
Transliterated by : Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobaI.net  
Proofread by : Jonathan Wiener, NA  
Description-comments : gaNesharahasya ashok kumAr gauD  
Latest update : July 6, 2017  
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com  
Site access : http://sanskritdocuments.org

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

---

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

August 20, 2017

*sanskritdocuments.org*

---

## ॥ वाल्मीकिकृतं श्रीगणेशस्तवनम् ॥

चतुःषष्टिकोट्याख्यविद्याप्रदं त्वां सुराचार्यविद्याप्रदानापदानम् ।  
कठाभीष्टविद्यार्पकं दन्तयुगं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ १ ॥

स्वनाथं प्रधानं महाविघ्ननाथं निजेच्छाविसृष्टाण्डवृन्देशनाथम् ।  
प्रभु दक्षिणास्यस्य विद्याप्रदं त्वां कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ २ ॥

विभो व्यासशिष्यादिविद्याविशिष्टप्रियानेकविद्याप्रदातारमाद्यम् ।  
महाशाक्तदीक्षागुरुं श्रेष्ठं त्वां कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ३ ॥

विधात्रे त्रयीमुख्यवेदांश्च योगं महाविष्णवे चागमाञ्च शङ्कराय ।  
दिशन्तं च सूर्याय विद्यारहस्यं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ४ ॥

महाबुद्धिपुत्राय चैकं पुराणं दिशन्तं गजास्यस्य माहात्म्ययुक्तम् ।  
निजज्ञानशक्त्या समेतं पुराणं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ५ ॥

त्रयीशीर्षसारं रुचानेकमारं रमाबुद्धिदारं परं ब्रह्मपारम् ।  
सुरस्तोमकायं गणौघाधिनाथं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ६ ॥

चिदानन्दरूपं मुनिध्येयरूपं गुणातीतमीशं सुरेशं गणेशम् ।  
धरानन्दलोकादिवासप्रियं त्वां कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ७ ॥

अनेकप्रतारं सुरक्ताब्जहारं परं निर्गुणं विश्वसद्ब्रह्मरूपम् ।  
महावाक्यसन्दोहतात्पर्यमूर्तिं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ८ ॥

इदं ये तु कव्यष्टकं भक्तियुक्तात्रिसन्ध्यं पठन्ते गजास्यं स्मरन्तः ।  
कवित्वं सुवाक्यार्थमत्यद्भुतं ते लभन्ते प्रसादाद् गणेशस्य मुक्तिम् ॥ ९ ॥

इति वाल्मीकिकृतं गणेशस्तवनं समाप्तम् ।

Encoded and proofread by Jonathan Wiener wiener78 at  
sbcglobal.net


.. Shri Ganeshastavanam by Valmiki ..

Searchable pdf was typeset using XeTeXgenerateactualtext feature of Xe<sub>La</sub>TeX 0.99996

॥ वाल्मीकिकृतं श्रीगणेशस्तवनम् अथवा गणेशाष्टकम् ॥

---

on August 20, 2017

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

